RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

महाराजा रणजीत सिंह का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

डॉ0 राजू कुमार

इतिहास विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार)

रणजीत सिंह का जन्म सुकरचकिया मिसल के नेता महासिंह के यहाँ 13 नवंबर 1780 ई. में हुआ। उनकी माता राजकौर जींद घराने की थी। यद्यपि उसके भाई फागनसिंह एवं दौलासिंह ने उसे शिक्षित करने का पूरा प्रयास किया पर वे असफल रहे यद्यपि उसे खेलकूद तथा युद्ध कला में काफी रूचि थी जिसके आधार पर उसका भावी जीवन बना। रणजीत की तीक्ष्ण बुद्धि एवं बहादुरी ने लोगों को प्रभावित किया। उसके पिता की उसके सम्बन्ध में ऊंची राय थी जिसे वह कई आक्रमणों में अपने साथ ले गया। उसने कहा था : 'गुजरानवाला राज्य मेरे वीर लड़के के लिए छोटा पड़ेगा। एक दिन वह अपने लिए एक बड़ा साम्राज्य तैयार कर लेगा। जीवन के प्रारम्भ में उसे अत्यधिक संघर्ष करना पड़ा। पाँच वर्ष की अवस्था में रणजीत के पिता ने उसकी सगाई जयसिंह कन्हैया की पोती से कर दी थी। अपने पुत्र विहिन पिता की मृत्यु पर यह लड़की कन्हेया मिसल के प्रदेशों की शासक बन गई। अपनी पत्नी द्वारा रणजीत को वह सब प्रदेश मिल गये। बारह वर्ष की अवस्था में ही (1792 ई.) उनके पिता चल बसे। अल्पायु में सरदार बन जाने से उसे अपनी सास सदाकौर के निर्देशन में कार्य करना पड़ा। 1796 ई. में काबुल के जमानशाह ने पंजाब क्षेत्र पर आक्रमण किया। किन्तु उसे आन्तरिक विद्रोह के कारण शीघ्र ही अफगानिस्तान लौटना पड़ा। अगले वर्ष जमानशाह ने सिक्खों को सजा देने के लिए पुनः हमला किया। अब सिक्खों का नेतृत्व रणजीतसिंह कर रहा था। उसने अफगान सेना को अमृतसर में भारी आघात पहुँचाया और लाहौर तक उसका पीछा किया। इस तरह अफगानों से सिक्ख सरदारों ने अपने खोये प्रदेश वापस प्राप्त कर लिए। इन दो संघर्षों की सफलता ने रणजीतसिंह को सिक्खों का नेता बना दिया। कनिंघम ने लिखा है कि वह लाहौर पर अधिकार प्राप्त करना चाहता था जिसे शक्ति का केन्द्र समझा जाता था, झेलम बढ़ी हुई थी और दुर्रानीशाह अपने भारी तोपखाने को उस पार ले जाने में असमर्थ था अतः उसने रणजीतसिंह को संदेश भेजा कि उन तोपों को भिजवाने में मदद करने पर शाह उसकी इस सेवा को बहुत महत्व देगा। रणजीतसिंह ने शाह के पीछे जितना संभव था उतनी संख्या में तोपें भेज दी और इसके बदले में उसका इच्छित उद्देश्य पूर्ण हो गया, उसे पंजाब की राजधानी के सम्बन्ध में शाही प्रतिनिधि मान लिया गया था। किन्तु खुशवन्तसिंह ने कनिंघम, एन. के. सिन्हा, अब्दुल लतीफ आदि के इस विचार को स्वीकार नहीं किया है। उनकी मान्यता है कि 'अप्रैल 1800 ई. में कैलिंग द्वारा लिखे गये दो पत्रों से स्पष्ट होता है कि जमानशाह ने रणजीतसिंह को भेंट लाहौर के अधिकार के बाद भेजी थी एवं तोपों को लौटाने का इससे कोई विशेष सम्बन्ध नहीं था। उसने तो केवल यही लिखा था कि वह तोपों के बदले उसे लाहौर की सूबेदारी दे देगा यदि वह उस पर स्वयं अधिकार करने में समर्थ हो। इन पत्रों के आने से पहले ही रणजीतसिंह लाहौर पर आक्रमण कर चुका था। इस प्रकार उन्नीस वर्ष की अवस्था में उसने राजा की उपाधि ग्रहण की एवं काबुल के जमानशाह ने भी उसे सूबेदार (गवर्नर) मान लिया। इस घटना से एक ''आश्चर्यजनक रूप से सफल सैनिक जीवन'' का प्रारम्भ हुआ, जिके वीरतापूर्ण कामों के फलस्वरूप पंजाब में अफगान प्रभुत्व विनष्ट हो गया तथा सिक्खों के एक मजबूत राष्ट्रीय राजतंत्र का निर्माण हुआ। राणजीत सिंह ने शीघ्र ही अफगानों का जुआ उतार फेंका।

रणजीतसिंह ने अपनी शक्ति का विस्तार करने के लिए तीन महत्वपूर्ण कार्य किये जिनका उल्लेख करना अप्रासंगिक न होगा। उसने सर्वप्रथम अपनी सत्ता को सुदृढ़ करने हेतु वैवाहिक सम्बन्धों की स्थापना की। रणजीतसिंह के कई रानियाँ थी। छोटी–छोटी मिसलों का सहयोग प्राप्त करने के लिए उसने कई शादियाँ की। डॉ. सिन्हा ने लिखा है : वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करके रणजीतसिंह ने अपना पक्ष प्रभावशाली बना लिया। अहलुवालिया मिसल के नेता फतहसिंह ने रणजीतसिंह से मैत्री सम्बन्ध बनाये। इस प्रकार रणजीतसिंह का उत्थान राजनीतिक मैत्री एवं विवाह सम्बन्धों की सहायता से हुआ। अतः सर ग्रीफिन द्वारा रणजीतसिंह को व्यभिचारी कहना सर्वथा अनुचित ही नहीं पूर्वाग्रहपूर्ण भी है।

अपनी शक्तियों में अभिवृद्धि करने के लिए दूसरी प्रादेशिक विस्तार की नीति अपनाई। लाहौर की विजय से भांगी, रामगढ़िया एवं अन्य सिक्ख सरदार रणजीतसिंह के विरोधी हो गये थे। लाहौर के पूर्व भसीन गाँव में एक सेना भी एकत्र हुई। रणजीतसिंह इनका सामना करने के लिए तत्पर था। लेकिन युद्ध प्रारम्भ होने से पूर्व ही 1800 ई. में विरोधी गुट में आपसी विवाद हो गया एवं उनका नेता गुलाबसिंह भांगी के मर जाने से संघर्ष टल गया। पंजाब के छोटे–छोटे राज्य परस्पर संघर्षरत रहते थे और रणजीतसिंह जैसा महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति इन परिस्थितियों का लाभ उठाना चाहता था। अपने अनुकूल परिस्थितियों का उसने पूरा लाभ उठाया।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

1805 ई. लगभग जम्मू, नरवल, मिरोवल, अकलगढ़, पिंडी, भाटिया, धन्नी, फगवाड़ा, जिंद, कर्ला, कठिया आदि को अपने प्रभाव क्षेत्र में ले लिया और कुछ को अपने अधीनस्थ बना लिया। 1806 से 1809 ई. के मध्य कसूर, पठानकोट, जसरोटा, छम्ब, बसोली, शेखपुरा, गुजरात (चिनाब के किनारे स्थित), कांगड़ा पर भी उसका अधिकार हो गया और कुछ राज्यों ने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. जैन, एम. एस., आधुनिक भारत का इतिहास, पृ. 156।
2. विद्याधर महाजन, आधुनिक भारत का इतिहास।
3. बी. एल. ग्रोवर एवं यशपाल, आधुनिक भारत का इतिहास।
4. ताराचंद, आधुनिक भारत का इतिहास।
5. कनिंघम, सिक्खों का इतिहास, इतिहास प्रकाशन संस्थान, वाराणसी, 1965, पृ. 1।
6. स्मिथ, आक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑव इण्डिया, पृ. 610।

RRIJM 2015, All Rights Reserved